सोशल मीडिया के उपयोग से युवाओं में बढ़ती अतिसक्रियता व उसके दुष्परिणाम का अध्ययन

रीना शर्मा

शोधकर्ताए समाजशास्त्र ज्योतिविद्यापीठमहाविद्यालयए जयपुर

प्रो. मंजू शर्मा

शोध निदेशकए निदेशक कला विभाग ज्योतिविद्यापीठमहाविद्यालयए जयपुर

सारांश. सोशल मीडिया का प्रयोग वर्तमान में तेजी से बढ़ रहा है और इसके साथ ही इसका प्रभाव बढ़ रहा है। सोशल मीडिया का उपयोग युवाओं में तेजी से हो रहा है। संपर्क के साधन के साथ राजनीति, अर्थव्यवस्था और अन्य क्षेत्रों में इसके उपयोग में तेजी आ रही है। इसके कारण यह समाज के प्रत्येक पहलू को प्रभावित कर रहा है विशेषकर युवाओं के नैतिक और सामाजिक मूल्यों के साथ यह युवाओं की जीवनशैली और विचारों को प्रभावित कर रहा है। युवा सोशल मीडिया पर अपनी निजी जिंदगी खोलने लगा है साथ ही अन्य अप्रमाणित खबरों को वह सच मानने लगा है। धीरे –धीरे 21 वीं सदी के पदचाप के साथ बहुत सारी चीजों में बड़े बदलाव सामने आये। अब जब भी मन कुछ पढ़ने का होता है तो सबसे पहले हमारा ध्यान पुस्तकों की बजाय स्मार्टफोन पर जाता है। पुस्तकों का स्थान इंटरनेट ने ले लिया है। ज्ञानवर्धक कहानी कविताओं की बजाय सोशल मीडिया साइट पर शेयर हो रही पोस्ट पढ़ी जाने लगी हैं। फेसबुक, यू–ट्यूब, इंस्टाग्राम में दोस्तों की फोटो देखी जाने लगी हैं। सबसे ज्यादा असर इंस्टेंट मैसेजिंग सर्विस वाट्सएप का हो रहा है। इस स्मार्टफोन ने लोगों को पुस्तकों से दूर करने में महती भूमिका अदा की है। सोशल मीडिया साइट का बढ़ता उपयोग लोगों को वास्तविक ज्ञान से दूर एक आभाषी दुनिया की ओर खींच रहा है, जिसकी सच्चाई का किसी को पता भी नहीं है। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि सोशल मीडिया ने लोगों की पढ़ने की आदत को कम कर दिया है। जिसके कारण सोशल मीडिया का नकारात्मक पहलू भी उभर रहा है। प्रस्तुत लेख में सोशल मीडिया के इन्हीं प्रभावों को विस्तारपूर्वक विवेचित और विश्लेषित किया गया है।

मूल शब्दः पुस्तक, अखबार, उपन्यास, बदलाव, तकनीक, स्मार्टफोन, सोशल मीडिया, ज्ञानसाइबर अपराध,

प्रस्तावना

सोशल मीडिया की परिभाषा में कहा गया है कि यह इंटरनेट आधारित अनुप्रयोगों का एक ऐसा समूह है जो प्रयोक्ता–जनित सामग्री के सृजन और आदान–प्रदान की अनुमति देता है। इसके अतिरिक्त सोशल मीडिया मोबाइल और वेब आधारित प्रौद्योगिकी से ऐसे क्रियाशील मंचों का निर्माण करता है जिनके माध्यम से व्यक्ति और समुदाय प्रयोक्ता–जनित सामग्री का संप्रेषण एवं सह–सृजन कर सकते हैं, उस पर विचार–विमर्श कर सकते है और उसका परिष्कार कर सकते हैं। यह संगठनों, समुदायों और व्यक्तियों के बीच संसार में महत्वपूर्ण और व्यापक परिवर्तनों को अंजाम देता है। 2000 के दशक के शुरू में सॉफ्टवेयर विकास कर्ताओं ने अंतिम इस्तेमाल कर्ताओं को इस बात में सक्षम बनाया कि वे वर्ल्डवाइड वेब पर स्थिर और निष्क्रिय पृष्ठों को देखने के बजाय अधिक परस्पर क्रियाशील बन सके, ऑन लाइन या वास्तविक समुदायों में प्रयोक्ता–जनित सामग्री का इस्तेमाल कर सके। इसकी परिणीति वेब 2.0 के रूप में हुई और सबसे महत्वपूर्ण बात यह हुई कि इससे एक अद्भुत प्रयोग का सृजन हुआ जिसे अब हम सोशल मीडिया कहते हैं। ख1,

सोशल मीडिया सामाजिक नेटवर्किंग वेब साइटों जैसे–फेसबुक, ट्विटर, लिंकर, यू–ट्यूब, लिंक्डइन, पिंटेरेस्ट, माइस्पेस, साउंडक्लाउड और ऐसे ही अन्य साइटों पर इस्तेमाल कर्ताओं को विचार–विमर्श, सृजन, सहयोग करने तथा टेक्स्ट, इमेज, ऑडियो और विडियों रूपों में जानकारी में हिस्सेदारी करने और उसे परिष्कृत करने की योग्यता और सुविधा प्रदान करता है। यह सच है कि सोशल मीडिया ने इंटरनेट का लोकतंत्रीकरण किया है और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इसने भाषण और अभिव्यक्ति के आदर्शो को संरक्षित किया है किंतु इसके साथ ही यह भी उतना ही सही है कि इसने ऐसे दैत्यों को भी जन्म दिया है जो घात लगाए रहते है और लगता है कि उनकी संख्या बढ़ रही है। हाथ में रखे जाने वाले मोबाइल उपकरणों जैसे – स्मॉर्टफोन और टैबलेट्स की संख्या तेजी से बढती जा रही है और इन उपकरणों पर इंटरनेट की उपलधता से वास्तविक समाजीकरण में तात्कालिता की भावना कई गुणा बढ गई है। इसके जरिए न केवल अति संवेदनशील और युवा दिलों को प्रभावित करने वाली अनुचित सामग्री आसानी से उपलब्ध हो जाती है, बल्कि निंदनीय मानसिकता वाले व्यक्तियों को विभिन्न प्रकार के जघन्य प्रयोजनों के लिए इस माध्यम का प्रयोग करने की छूट भी मिल जाती है। साइबर बुलिंग, साइबर स्टॉकिंग, अफवाहें फैलाना जैसे दुष्कर्म इस भयावह दैत्य के मामूली नमूने हैं। ख्2, ख्3,

सोशल नेटवर्किंग साइट आज लोगों से जुड़ने, उनके विचारों को बिना किसी रोक–टोक के दुनिया के सामने रखने का एक अनोखा मंच बन चुका है। आज युवाओं के बीच इसकी लोकप्रियता चरम पर है। युवाओं के साथ–साथ टिन–एजर्स, कॉर्पोरेट जगत की नामी हस्तियों में भी इसकी लोकप्रियता कुछ कम नहीं है। अब तो शायद सोशल नेटवर्किंग साइट्स के बगैर इंटरनेट की कल्पना ही बेईमानी सी प्रतीत होती है। फेसबुक, ट्विटर, लिंक्ड–इन जैसी सोशल नेटवर्किंग साइट आज काफी लोकप्रिय है। फेसबुक की बात करें तो अमेरिका के बाद सबसे ज्यादा यूजर भारत में हैं। सोशल नेटवर्किंग साइट्स एक ऐसा मंच है जिसके द्वारा हम अपने विचारों का आदान–प्रदान कर सकते हैं। किसी भी राजनैतिक, सामाजिक या अन्य किसी मुद्दे पर चर्चा कर सकते हैं। अपने खास अवसरों पर दूर बैठे दोस्तों से फोटो और वीडियो शेयर कर सकते हैं। सामाजिक और राजनैतिक गतिविधियों के प्रचार–प्रसार में अब तक सोशल नेटवर्किंग प्लेटफॉर्म ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आज अधिकांश इंटरनेट यूजर सोशल नेटवर्किंग से जुड़े हुए हैं। सोशल नेटवर्किंग उनके जीवन का एक अहम हिस्सा बन चुका है या यूं कहा जाए कि वे इसके आदी हो चुके हैं।

फेसबुक सोशल नेटवर्किंग साइट्स में सबसे लोकप्रिय और दुनिया भर में सबसे ज्यादा यूजर्स के साथ नंबर एक पर है। हाल के आंकड़ों को अगर देखें तो पता चलता है कि वर्तमान में एक अरब से ज्यादा यूजर्स हैं। आज से करीब 11 वर्ष पहले हॉर्वर्ड यूनिवर्सिटी के स्टूडेंट्स मार्क जकरबर्ग, एडूअर्डो सर्वेरिन, एंड्रू मैकूलम, डस्टिन मॉस्कोविज और क्रिस ह्यूज ने हॉस्टल रूम में मिलकर फेसबुक की संकल्पना रखी। पहले इसके उपयोग को सिर्फ अपने हॉर्वर्ड के मित्रों तक ही सीमित रखा गया लेकिन कुछ समय बाद इसकी लोकप्रियता को देखते हुए इसका विस्तार बोस्टन और अन्य विश्वविद्यालयों में भी किया गया।ख्4,

अमेरिकन विश्वविद्यालयों में इसका प्रचलित नाम 'द फेसबुक' रखा गया। अगस्त 2005 में इसका नाम 'द फेसबुक' से फेसबुक कर दिया गया। इसमें सदस्य बनने के लिए कम से कम 13 वर्ष का होना जरूरी है। सदस्य बनने के बाद आप इसमें अपनी एक प्रोफाइल बना सकते हैं, इस पर पहले से उपलब्ध अन्य सदस्यों को भी अपनी मित्र की सूची में जोड़ सकते हैं। जहां एक तरफ यह नए लोगों से जुड़ने का साधन है वहीं दूसरी तरफ अपने पुराने दोस्तों को ढूंढने का जरिया भी है। इसमें आप अपने स्टेट्स को अपडेट कर सकते हैं साथ ही साथ अपने मित्रों के स्टेट्स अपडेट्स को भी देख सकते हैं। जब भी कोई मित्र अपना स्टेट्स अपडेट करेगा तो वह आपके होम पेज पर दिखेगा। जिस पर आप लाइक या कमेंट कर सकते हैं। प्रोफाइल के साथ–साथ इस पर ग्रुप और अपने लिए पेज भी बना सकते हैं। जिस पर आप अपने विचार, फोटो और वीडियो भी डाल सकते हैं जिस पर लोग अपनी प्रतिक्रिया देते हैं और शुरू होता है एक दूसरे के विचारों को जानने और समझने का सिलसिला। यहाँ आप सीधे तौर पर लोगों से इंटरेक्ट होते हैं चाहे वह कोई भी हो।

फेसबुक पर उपलब्ध किसी भी व्यक्ति को आप इसके सर्च ऑप्शन से ढूंढ सकते हैं बशर्ते उसने अपने आप को हाइड (फेसबुक पर अपने प्रोफाइल को गुप्त रखने का एक ऑप्शन) न किया हो।

सोशल मीडिया नई जानकारी सीखने में मदद कर रहा है। सोशल मीडिया पर टेक्स्ट, मैसेज के अलावा, फोटो, वीडियो का बढ़ता चलन इस बात को दर्शाता है कि देश में तकनीक पर कितना काम हो रहा है। इस समय लगभग 400 करोड़ वीडियो फेसबुक पर हैं जिसमें से 75 फीसदी मोबाइल पर देखे जाते हैं। भारत में इस नए बिजनस से रोजगार के मौके बढ़ रहे हैं। एसएमबी यूजर्स में 70 फीसदी की सालाना बढ़त देखी जा रही है और फेसबुक पर टेक के जरिए आंत्रप्रेन्योर कारोबार बढ़ा है। लोगों का नए तरीके के वीडियो के जरिए खुद को पेश करना अच्छा इनोवेशन है। फेसबुक पर अब विभिन्न तरह की जानकारियां साझा की जाने लगी हैं जिसमें मार्केटिंग, ब्रांड–प्रमोशन, नौकरी के विज्ञापन, डेटिंग और मैरिज प्रपोजल के साथ–साथ कई तरह के प्रचार–प्रसार अभियान शामिल हैं। ख्5,

सोशल नेटवर्किगं साइटदुनियाभर के लोगों में फेसबुक का क्रेज है। लोग फेसबुक के इतने आदी हो चुके हैं कि इस पर अपडेट और चैटिंग में घंटों तल्लीन रहते हैं। यही वजह है कि अब कई दफ्तरों में इसके लिए पाबंदी या विशेष नियम लागू किए जा रहे हैं।फेसबुक की दीवानगी यहीं नहीं रुकती बल्कि इसके आगे भी इसकी पहुंच है। आज सेनाओं का युद्ध केवल जमीन पर हथियारों से नहीं बल्कि फेसबुक पर लोगों के लाइक के साथ भी जीत–हार तय हो रही है। सोशल नेटवर्किंग साइट फेसबुक पर भारतीय सेना शिखर पर है। अभी हाल की खबरों की माने तो कुछ ही महीने के अंदर यह दूसरा मौका है जब भारतीय सेना का फेसबुक पन्ना शीर्ष पर पहुंचा। सीआईए, एफबीआई, एनएएसए और यहां तक की पाकिस्तानी सेना सहित कई विदेशी सरकारी प्रतिष्ठानों को पीछे छोड़ते हुए भारतीय सेना एक बार फिर लोकप्रियता की सूची में सबसे उपर है। यह दूसरी बार है जब फेसबुक पर 'पीपल टॉकिंग अबाउट दैट' (पीटीएटी) रैंकिंग में भारतीय सेना का फेसबुक पेज सरकारी श्रेणी में एक नम्बर पर है। सेना के सोशल मीडिया के लिए यह बड़ी बात है। इससे यह भी साबित होता है कि सेनाओं को आगे बढ़ने की चाह अब मैदान पर ही नहीं बल्कि सोशल नेटवर्किंग साइट्स पर भी है। दरअसल पीटीएटी की रैंकिंग किसी खास पेज पर या उसके बारे में बात करने वालों की संख्या के विश्लेषण पर आधारित होती है।

दिलचस्प बात है कि फेसबुक पर भारत और पाकिस्तान के बीच आगे निकलने की होड़ जारी है और दोनों ने जिओ लोकेशन के माध्यम से एक दूसरे के एकाउंट को ब्लॉक कर रखा है। इसका मतलब यह है कि पाकिस्तान का कोई व्यक्ति भारतीय सेना के फेसबुक पेज को नहीं खोल सकता और न ही भारत का कोई व्यक्ति पाकिस्तानी सेना के फेसबुक पेज पर पहुंच सकता है। भारतीय सेना की यह उपलब्धि केवल फेसबुक पेज पर ही नहीं है, बल्कि सेना की आधिकारिक वेबसाइट को भी हर सप्ताह कम से कम पच्चीस लाख हिट मिलते हैं। सेना ने फेसबुक पर अपना खाता 1 जून, 2013 को खोला था, तब से उसे उन्नतीस लाख लोग लाइक कर चुके हैं। भारत में 65 प्रतिशत आबादी 35 वर्ष से कम है और सोशल नेटवर्किगं साइट पर सबसे ज्यादा युवा ही सक्रिय हैं।ख्6,

सोशल मीडिया ने इस्तेमालकर्त्ता–जनित सामग्री के जरिए सार्वजनिक जीवन के जाने–माने व्यक्तियों की प्रतिष्ठा को भी आघात पहुंचाया है, निजता, कॉपीराइट और अन्य मानवाधिकार कानूनों का अतिक्रमण किया है। इन सभी बातों के बावजूद इस अद्भुत माध्यम के विकास में कोई रूकावट नहीं आई, जिसने न केवल भारत में बल्कि पूरी दुनिया में परंपरागत मीडिया का स्थान लेने और उसे मार्ग से हटाने का खतरा पैदा कर दिया है। सोशल मीडिया की अक्सर यह कह कर आलोचना की जाती है कि इसने लोगों के व्यक्तिगत रूप से मिलने की प्रवृत्ति पर विपरीत असर डाला है, जहां परंपरागत ढंग से एक–दूसरे से मिलने और बातचीत करने का समय किसी के पास नहीं है, लेकिन इसके बावजूद डिजिटल स्पेस सामाजिक नेटवर्किंग के नित नए आयाम और आकर्षण उपलब्ध करा रहा है।

सामाजिक नेटवर्किंग और सोशल मीडिया के विकास के प्रमुख संचालकों में से एक है, मोबाइल टेलीफोनी। ए.सी.नेल्सन की द सोशल मीडिया रिपोर्ट (2012) में कहा गया था कि सोशल मीडिया तक पहुंच कायम करने

के लिए अधिकाधिक लोग स्मार्टफोनों और टेबलेट्स का इस्तेमाल कर रहे हैं। अधिक कनेक्टिविटी के साथ उपभोक्ताओं को सोशल मीडिया के इस्तेमाल करने की अधिक आजादी मिल रही है और वे जहां कहीं और जब चाहे सोशल मीडिया का इस्तेमाल कर सकते हैं।

इंटरनेट एंड मोबाइल ऐसोसिएशन ऑफ इंडिया की रिपोर्ट के अनुसार शहरी क्षेत्रों में सोशल मीडिया के प्रयोक्ताओं की संख्या दिसंबर 2012 तक 6.2 करोड पर पहुंच चुकी थी। शहरी भारत में प्रत्येक चार में से तीन व्यक्ति सोशल मीडिया का इस्तेमाल करते हैं। ख7,

इस रिपोर्ट के कुछ अन्य महत्वपूर्ण पहलू इस प्रकार है –

1. मोबाइल इंटरनेट का इस्तेमाल करते हुए सोशल नेटवर्किंग ऐक्सेस की औसत आवृति एक सप्ताह में सात दिन।

2. फेसबुक को भारत में 97 प्रतिशत सोशल मीडिया प्रयोक्ताओं द्वारा ऐक्सेस किया जाता है।

3. भारतीय सोशल मीडिया पर हर रोज औसत लगभग 30 मिनट व्यतीत करते है। इन इस्तेमाल कर्ताओं में अधिकतम युवा (84 प्रतिशत) और कॉलेज जाने वाले विद्यार्थी (82 प्रतिशत) है।

सस्ते मोबाइल हैंडसेट आसानी से उपलब्ध होने के कारण यह सहज अनुमान लगाया जा सकता है कि इंटरनेट का इस्तेमाल और नतीजतन सोशल मीडिया नेटवर्किंग के इस्तेमाल में भारत में आने वाले कुछ वर्षों में जबरदस्त बढोतरी होगी। इस रिपोर्ट में कहा गया है कि आज यह देखा जा रहा है कि मोबाइल फोन के जरिए सोशल नेटवर्किंग के इस्तेमाल में निरंतर बढोतरी हो रही है। मोबाइल फोन का प्रसार अत्यंत तीव्र गति से हो रहा है और ज्यादा से ज्यादा संख्या में लोग ऐसे फोन अपना रहे है जिनमें अनेक विशिष्टताएं होती है अथवा स्मार्ट फोनों की संख्या लोगों के पास बढती जा रही है। जो इंटरनेट ऐक्सेस प्रदान करने वाले होते है, जिससे सोशल नेटवर्किंग साइट्स भारत में सक्रिय इंटरनेट प्रयोक्ताओं के आधार का तेजी से प्रसार कर रही है। मोबाइल इंटरनेट सस्ता होने के कारण भी इसमें वृद्धि हो रही है। ख8, ख9,

सोशल मीडिया की बादशाहत पूरे समाज के सिर चढ़कर बोल रही है। हर आयु वर्ग के लोग इसकी गिरफ्त में हैं। यह लोगों को हंसाने के साथ रुलाने भी लगी है। अब तो नाबालिग भी इसकी गिरफ्त में आ चुके हैं, जो समाज के लिए शुभ संकेत नहीं है। सोशल मीडिया के ही अंग फेस बुक ने दो वर्ष पहले पड़ोसी राष्ट्र नेपाल के काठमांडू से गायब भाई को फेसबुक के जरिए भारत में मिला दिया। अगस्त 2012 में काठमांडू से रहस्यमय हालात में गायब 25 वर्षीय सुमित झा को दो नवंबर 14 को फेस बुक ने परिवार से मिलाया था। बड़े भाई 27 वर्षीय अमित झा ने बताया था कि छोटे भाई के गायब होने के बाद बहुत ढूंढा पर जब वह नहीं मिला तो एक वर्ष पहले फेसबुक पर उसकी फोटो डाली। इसका सार्थक परिणाम निकला और फेसबुक पर फोटो डालने के एक वर्ष के बाद हमारा छोटा भाई हमें मिल गया। इस खबर को दैनिक जागरण ने दो नवंबर 14 के अंक में प्रकाशित किया था। यह रहा सोशल मीडिया का सकारात्मक पहलू। इसके नकारात्मक पहलू पर जागरण ने समाज शास्त्रियों व मनोवैज्ञानिकों से बात की। प्रस्तुत है उनके विचार – डा. अभिमन्यु सिंह ने कहा कि सोशल मीडिया का उपयोग सभी को करना चाहिए पर इसकी मानीटोरग भी होनी चाहिए। इसके उपयोग के लिए समय का निर्धारण होना चाहिए। क्योंकि इस पर अच्छी के साथ ही खराब जानकारियां भी उपलब्ध हैं। सोशल मीडिया पर अच्छी व सच्ची जानकारी डाली जानी चाहिए। ख10, ख11,

साइबर अपराध और सोशल मीडिया की भूमिका–हम जितनी तेजी से डिजिटल दुनिया की ओर बढ़ रहे हैं, ठीक उतनी ही तेजी से साइबर अपराध की संख्या में भी वृद्धि हो रही है। जिस गति से तकनीक ने उन्नति की है, उसी गति से मनुष्य की इंटरनेट पर निर्भरता भी बढ़ी है। एक ही जगह पर बैठकर इंटरनेट के जरिये मनुष्य की पहुँच, विश्व के हर कोने तक आसान हुई है। आज के समय में हर वो चीज जिसके विषय में इंसान सोच सकता है, उस तक उसकी पहुँच इंटरनेट के माध्यम से हो सकती है, जैसे कि सोशल नेटवर्किंग, ऑनलाइन शॉपिंग, डेटा स्टोर करना, गेमिंग, ऑनलाइन स्टडी, ऑनलाइन जॉब इत्यादि। आज के समय में इंटरनेट का उपयोग लगभग हर क्षेत्र में किया जाता है। इंटरनेट के विकास और इसके संबंधित लाभों के साथ साइबर अपराधों की अवधारणा भी विकसित हुई है। वर्तमान में भारत की बड़ी आबादी सोशल नेटवर्किंग

साइट्स का उपयोग करती है। भारत में सोशल नेटवर्किंग साइट्स के उपयोग के प्रति लोगों में जानकारी का अभाव है। इसके साथ ही अधिकतर सोशल नेटवर्किंग साइट्स के सर्वर विदेश में हैं, जिससे भारत में साइबर अपराध घटित होने की स्थिति में इनकी जड़ तक पहुँच पाना कठिन होता है।
इस आलेख में साइबर अपराध और सोशल मीडिया की भूमिकापर विमर्श किया जाएगा। इसके साथ ही साइबर अपराध में सोशल नेटवर्किंग साइट्स की भूमिका का का अध्ययन करना।किया जाएगा

अध्ययन के उद्देश्यः

- सोशल मीडिया सामाजिक मुद्दों पर जनमत निर्माण करने में सहायक है का अध्ययन।
- सोशल मीडिया पर सूचना संचरण के सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव का अध्ययन करना।
- सोशल मीडिया पर युवाओं में बढ़ती अतिसक्रियता व उसके दुष्परिणाम
- साइबर अपराध और सोशल मीडिया की भूमिकाका अध्ययन करना।

युवाओं में में बढ़ती कनेक्टिविटी और भागीदारी

आज युवाओं में कनेक्टिविटी का दायरा काफी बढ़ गया है। अब वे खुद को कॉलेज, दोस्ती और पढ़ाई तक ही सीमित नहीं रखते बल्कि यूथ फ्रेंडली चीजों को अपनी लाइफ से जल्दी जोड़ लेते हैं। यही कारण है कि आज इंटरनेट उनकी लाइफ का हिस्सा बन गया है, लेकिन उनके इस लगाव का खांमियाजा कभी न कभी दूसरों को भी भुगतना पड़ता है। कभी छोटी–छोटी बात इंटरनेट पर शेयर कर वे दूसरों की प्राइवेसी को खत्म कर देते हैं तो कभी दोस्ती, बुराई और अच्छाई को दूसरों से शेयर करते हैं। युवाओं के बीच फेसबुक का क्रेज इस कदर हावी है कि कॉलेज कैम्पस हो या फिर घर, वे हर वक्त इस पर ही चर्चा करते हैं। इतना ही नहीं, लैपटॉप और मोबाइल के माध्यम से हर वक्त ऑनलाइन ही मिलते हैं। इसका सीधा असर पर्सनल लाइफ पर पड़ रहा है। वे छोटी–छोटी चीजों को तत्काल फेसबुक पर शेयर करते हैं तो कभी अपनी पर्सनल व्यू या कमेंट करने से भी पीछे नहीं रहते। फेसबुक में युवाओं की भागीदारी तेजी से बढ़ रही है। कभी–कभी तो न शेयर करने वाली फोटो और वीडियो भी फेसबुक पर शेयर कर उसका लुफ्त उठाते हैं। जो उन्हें बड़ी परेशानी में भी डाल देता है इंटरनेट की दुनिया ने भले ही लोगों की सोच का दायरा बड़ा दिया है, लेकिन जहां तक सोशल नेटवर्किंग की बात है, इससे युवा काफी प्रभावित हुए हैं।ख्12,
आज फेसबुक की वजह से लोग घंटों अपना कीमती समय इस पर चैटिंग कर बर्बाद कर रहे हैं। जिसकी वजह से उनमें एकांकी प्रवृत्ति देखने को मिल रही है जो काफी खतरनाक है। कई शोध ये बताते हैं कि इसकी वजह से लोगों में अधीरता और चिड़चिड़ेपन की आदत बढ़ी है। जिससे लोगों का भौगोलिक सहयोग और व्यवहार काफी बिगड़ गया है। लोग अपनी बेहद निजी जानकारी भी इस पर शेयर करने से नहीं चूकते। जिससे अपराधी किसी के खिलाफ उनकी शेयर की गई जानकारी का गलत इस्तेमाल कर सकता है यानि अब खतरा प्राइवेसी भर ही नहीं रहा। इन सब के बावजूद भी लोगों में फेसबुक इस्तेमाल करने की चाहत बिल्कुल भी कम नहीं हो रही है।

अच्छी चीजें परोसने से रुकेगी आपराधिक प्रवृत्ति

डा. प्रज्ञेश कुमार मिश्र (2008) ने कहा कि सोशल मीडिया पर अच्छी जानकारियों व चीजें परोसने से युवाओं में आपराधिक प्रवृत्ति रुकेगी और सोशल मीडिया का साइड इफेक्ट नहीं पड़ेगा। दरअसल मानव की प्रवृत्ति अनुकरणात्मक होती है। समाज में जैसा परोसा जाएगा वैसा ही लोग अनुसरण करेंगे। आज का दौर अगर सही मायने में देखें तो युवाशक्ति का दौर है। भारत में इस समय 65 प्रतिशत के करीब युवा हैं जो किसी और देश में नहीं हैं और इन युवाओं को जोडने का काम सोशल मीडिया कर रहा है। युवा वर्ग के लोगों में सोशल नेटवर्किंग साइट्स का क्रेज दिन पर दिन बढ़ता जा रहा है जिसके कारण आज सोशल नेटवर्किंग दुनिया भर

में इंटरनेट पर होने वाली नंबर वन गतिविधि बन गया है। एक परिभाषा के अनुसार, 'सोशल मीडिया को परस्पर संवाद का वेब आधारित एक ऐसा अत्यधिक गतिशील मंच कहा जा सकता है जिसके माध्यम से लोग संवाद करते हैं, आपसी जानकारियों का आदान–प्रदान करते हैं और उपयोगकर्ता जनित सामग्री को सामग्री सृजन की सहयोगात्मक प्रक्रिया के एक अंश के रूप में संशोधित करते हैं।' सोशल नेटवर्किंग साइट्स युवाओं की जिंदगी का एक अहम अंग बन गया है। इसके माध्यम से लोग अपनी बात बिना किसी रोक–टोक के देश और दुनिया के हर कोने तक पहुंचा सकते हैं।

युवाओं के जीवन में सोशल नेटवर्किंग साइट्स ने क्रांतिकारी परिवर्तन लाया है। अगर इंटरनेट एंड मोबाइल एसोसिएशन ऑफ इंडिया द्वारा जारी आंकड़ों की माने तो भारत के शहरी इलाकों में प्रत्येक चार में से तीन व्यक्ति सोशल मीडिया का किसी न किसी रूप में प्रयोग करता है। इसी रिपोर्ट में 35 प्रमुख शहरों के आंकड़ों के आधार पर यह भी बताया गया कि 77 प्रतिशत उपयोगकर्ता सोशल मीडिया का इस्तेमाल मोबाइल से करते हैं। सोशल मीडिया तक पहुंच कायम करने में मोबाइल का बहुत बड़ा योगदान है और इसमें भी युवाओं की भूमिका प्रमुख है। भारत में 25 साल से अधिक आयु की आबादी 50 प्रतिशत और 35 साल से कम आयु की 65 प्रतिशत है। इससे देखते हुए आंकड़े बताते हैं कि भारत में सोशल मीडिया पर प्रतिदिन करीब 30 मिनट समय लोगों द्वारा व्यतीत किया जा रहा है। इनमें अधिकतम कालेज जाने वाले विद्यार्थी (82 प्रतिशत) और युवा (84 प्रतिशत) पीढ़ी के लोग शामिल हैं। सोशल साइट्स ने स्कूली दिनों के साथियों से मिलवाया तो आज देश–दुनिया के कोने में रहने वाले मित्र भी एक–दूसरे को फेसबुक पर ढूंढ़ रहे हैं। सोशल मीडिया के द्वारा जिनसे वास्तविक जीवन में मुलाकातें भले ही न पाये पर सोशल साइट्स पर हमेशा जुड़े रहते हैं। सोशल मीडिया की सफलता इससे भी देखी जा सकती है कि परंपरागत मीडिया भी अब फेसबुक व ट्विटर जैसे माध्यमों पर न सिर्फ अपने पेज बनाकर उपस्थिति दर्ज करा रही है, बल्कि विभिन्न मुददों पर लोगों द्वारा व्यक्त की गयी राय को इस्तेमाल भी कर रही है।

भारत सहित दुनिया के विभिन्न देशों में सोशल मीडिया ने सिर्फ व्यक्तिगत स्तर पर ही नहीं बल्कि कई सामाजिक व गैर–सरकारी संगठन भी अपने अभियानों को मजबूती दी है। सोशल मीडिया सिर्फ अपना चेहरा दिखाने का माध्यम नहीं रह गया है। जिन देशों में लोकतत्र का गला घोंटा जा रहा है वहां अपनी बात कहने के लिए लोगों ने सोशल मीडिया का लोकतंत्रीकरण भी किया है। हाल के वर्षों में अरब जगत में हुई क्रांतियों में सोशल मीडिया ने महत्पूर्ण भूमिका अदा की है।

युवाओं पर सोशल मीडिया का प्रभाव बहुत ही गहन है। ये वो वर्ग है जो सबसे ज्यादा सपने देखता है और उन सपनों को पूरा करने के लिए जी–जान लगाता है। युवा और सोशल मीडिया एक दूसरे से जुड़ गए हैं। जहां एक तरफ सोशल मीडिया युवाओं के सपनों को एक नयी दिशा दे रही है वही दूसरी ओर युवा वर्ग अपने सपनों को साकार करने के लिए इस माध्यम का उपयोग कर रहे हैं। इंटरनेट से लेकर थ्री–जी मोबाइल तक युवा सोशल मीडिया के माध्यम से देश–दुनिया की सरहदों को पार कर अपने सपनों की उड़ान कर रहे हैं। ब्लॉगिंग के जरिए जहां ये युवा अपनी समझ, ज्ञान और भड़ास निकालने का काम कर रहे हैं। वहीं सोशल मीडिया साइट्स के जरिए दुनिया भर में अपनी समान मानसिकता वालों लोगों को जोड़कर सामाजिक सरोकार–दायित्व को पूरी तन्मयता से पूरी कर रहे हैं।

लेकिन इसका एक नकारात्मक पहलू भी है। युवाओं को सोशल नेटवर्किंग वेबसाइट्स का नशा सा हो गया है। सोशल वेबसाइट पर दिन में कई बार स्टेट्स अपडेट करना, घंटों तक मित्रों के साथ चौटिंग करना जैसी आदतों ने युवा पीढ़ी को काफी हद तक प्रभावित किया है। घंटों तक फेसबुक व ट्वीटर जैसी वेबसाइट्स पर समय बिताने से न केवल उनकी पढ़ाई प्रभावित हो रही है बल्कि धीरे–धीरे कुछ नया करने की रचनात्मकता भी खत्म हो रही है। सोशल नेटवर्किंग साइट्स के माध्यम से तमाम अश्लील सामग्री और भड़काऊ बातें भी लोगों तक प्रसारित की जा रही है, जोकि लोगों के मनोमस्तिष्क पर बुरा प्रभाव डालती है और जिनकी वजह से देश में दंगा फसाद में वृदि हुई है। सोशल नेटवर्किंग साइट्स ने लोगों को वास्तविक जीवन को भूलाकर आभासी जीवन में रहने को मजबूर कर दिया है। सोशल साइट्स की आदत के कारण युवाओं में व्यक्तिगत

संवाद की दिक्कत होती है, जिससे वे सामाजिक रूप से प्रभावी संवाद नहीं कर पाते हैं। इसके परिणाम स्वरुप आज के युवा पड़ी में धैर्य की भारी कमी देखी जा सकती है। युवावस्था एक ऐसी स्थिति होती है जिसमें व्यक्ति को अपने उपदेश के बारे में नहीं पता होता और उसके कारण उससे गलत संगति में पडने में जरा सा भी समय नहीं लगता। सोशल मीडिया के द्वारा युवाओं को पश्चिमी सभ्यता का अंधाधुंध अनुसरण करना आधुनिकता का मापदान लगने लगा है।

युवाओं में बढ़ती अतिसक्रियता व उसके दुष्परिणाम

वर्तमान समय में सोशल मीडिया के प्रयोग ने युवाओं को समय से पहले आक्रांत कर दिया है। युवा तुरंत पहचान बनाना चाहता है। बिना इंतजार किए प्रतिष्ठित होना चाहता है, और जब चाह नहीं पूरी होती तो वे आक्रामक व आपराधिक कार्यों को करने से नहीं डरते।

सोशल मीडिया का दुष्प्रभाव

यह बहुत सारी जानकारी प्रदान करता है जिनमें से बहुत सी जानकारी भ्रामक भी होती है। जानकारी को किसी भी प्रकार से तोड़–मरोड़कर पेश किया जा सकता है। किसी भी जानकारी का स्वरूप बदलकर वह उकसावे वाली बनाई जा सकती है जिसका वास्तविकता से कोई लेना–देना नहीं होता। यहां कंटेंट का कोई मालिक न होने से मूल स्रोत का अभाव होना। प्राइवेसी पूर्णतः भंग हो जाती है। फोटो या वीडियो की एडिटिंग करके भ्रम फैला सकते हैं जिनके व्दारा कभी–कभी दंगे जैसी आशंका भी उत्पन्न हो जाती है। सायबर अपराध सोशल मीडिया से जुड़ी सबसे बड़ी समस्या है।

युवाओं पर सोशल नेटवर्क का प्रभाव

इन दिनों सोशल नेटवर्किंग साइटों से जुड़े रहना सबको पसंद है। कुछ लोगो का मानना है कि यदि आप डिजिटल रुप में उपस्थित नहीं है, तो आपका कोई अस्तित्व नहीं हैं। सोशल नेटवर्किंग साइटों पर उपस्थित का बढ़ता दबाव और प्रभावशाली प्रोफाइल, युवाओं को बड़े पैमाने पर प्रभावित कर रही है। आंकड़ों के मुताबिक एक सामान्य किशोर प्रति सप्ताह औसत रुप से 72 घंटे सोशल मीडिया का उपयोग किया जाता है, ये चीजे अन्य कार्यो के लिए बहुत कम समय छोड़ते है जिनके कारण उनके अदंर गंभीर समस्याएं पैदा होने लगती है जैसे अध्ययन, शारीरिक और अन्य फायदेमंद गतिविधियों में कमी, न्यूनतम ध्यान, चिंता और अन्य जटिल मुद्दों को उजागर करती है। अब हमारे पास वास्तविक मित्र की तुलना में अप्रत्यक्ष मित्र सबसे अधिक होते जा रहे हैं और हम दिन प्रतिदिन एक–दूसरे से संबंध खोते जा रहे हैं। इसके साथ ही अजनबियों, यौन अपराधियों को अपनी निजी जानकारीयो को दे बैठना आदि भी कई खतरे है।

सोशल मीडिया के नुकसानः सोशल मीडिया को आजकल हमारे जीवन में होने वाले सबसे हानिकारक प्रभावो में से एक माना जाने लगा है, और इसका गलत उपयोग करने से बुरा परिणाम सामने आ सकता है। सोशल मीडिया के कई नुकसान और भी हैं जैसेः–

साइबर बुलिंगः कई बच्चे साइबर बुलिंग के शिकार बने हैं जिसके कारण उन्हें काफी नुकसान हुआ है।

हैकिंगः व्यक्तिगत डेटा का नुकसान जो सुरक्षा समस्याओं का कारण बन सकता है तथा आइडेंटिटी और बैंक विवरण चोरी जैसे अपराध, जो किसी भी व्यक्ति को नुकसान पहुंचा सकते हैं।

बुरी आदतेः सोशल मीडिया का लंबे समय तक उपयोग, युवाओं में इसके लत का कारण बन सकता है। बुरी आदतो के कारण महत्वपूर्ण चीजों जैसे अध्ययन आदि में ध्यान खोना हो सकता है। लोग इससे प्रभावित हो जाते हैं तथा समाज से अलग हो जाते हैं और अपने निजी जीवन को नुकसान पहुंचाते हैं।

घोटालेः कई शिकारी, कमजोर उपयोगकर्ताओं की तलाश में रहते हैं ताकि वे घोटाले कर और उनसे लाभ कमा सके।रिश्ते में धोखाधड़ीः हनीट्रैप्स और अश्लील एमएमएस सबसे ज्यादा ऑनलाइन धोखाधड़ी का कारण हैं। लोगो को इस तरह के झूठे प्रेम–प्रंसगो में फंसाकर धोखा दिया जाता है।स्वास्थ्य समस्याएंः सोशल मीडिया

का अत्यधिक उपयोग आपके शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को बड़े पैमाने पर प्रभावित कर सकता है। अक्सर लोग इसके अत्यधिक उपयोग के बाद आलसी, वसा, आंखों में जलन और खुजली, दृष्टि के नुकसान और तनाव आदि का अनुभव करते हैं।सामाजिक और पारिवारिक जीवन का नुकसानः सोशल मीडिया के अत्यधिक उपयोग के कारण लोग परिवार तथा समाज से दुर, फोन जैसे उपकरणों में व्यस्थ हो जाते है।

युवाओं पर दुष्परिणाम का प्रभाव

आज फेसबुक की लोकप्रियता से कौन नहीं परिचित है। 13 वर्ष की न्यूनतम उम्र के बावजूद 10 वर्ष तक के टिनएजर्स भी डेट ऑफ बर्थ को घटा कर अपना एकांउट चलाते हैं इसी बात से आप इसकी दीवानगी का अंदाजा लगा सकते हैं। हाल के दिनों में आम लोगों के बीच स्मार्ट फोन के इस्तेमाल का चलन तेजी से बढ़ा है। इसका एक मात्र कारण नजर आता है सोशल नेटवर्किंग साइट्स। इससे फायदा यह हुआ कि अलग–अलग समूह के लोग सोशल नेटवर्किंग साइट के इस्तेमाल के जरिए एक मंच पर आ गए जो दो लोग या समूह आपस में कभी मिले नहीं, वे भी सोशल नेटवर्किंग साइट के जरिए एक हो रहे हैं। दिल्ली की एक छात्रा के साथ हुए सामूहिक बलात्कार के बाद जिस तरह लोग दिल्ली की सड़कों पर जुटे उसमें सोशल नेटवर्किंग साइट्स की भूमिका बेहद अहम रही। सोशल नेटवर्किंग साइट का इस्तेमाल करने वालों की संख्या लगातार बढ़ रही है। फेसबुक पर लोग अपनी निजी जिंदगी से जुड़ी चीजों को काफी ज्यादा शेयर कर रहे हैं। इससे कई बार उनके लिए मुश्किलें बढ़ रहीं हैं। अभी बीबीसी पर आई हाल की खबर को देखें तो एक युवती को उसके नियोक्ता ने प्रमोशन देने से इसलिए इनकार कर दिया क्योंकि उसने सोशल नेटवर्किंग साइट पर कुछ ऐसी तस्वीरें डाल रखीं थीं जिनमें वह अपने विश्वविद्यालय के दिनों में अपने दोस्तों के साथ शराब पी रही थीं।

नकारात्मक प्रवृत्ति पर रोक जरूरी

सोशल मीडिया के फायदे तो बहुत हैं, पर इसने युवाओं को दिग्भ्रमित भी खूब किया है। इस पर धार्मिक उन्माद बढ़ाने वाले बयान नहीं आने चाहिए। अश्लील वीडियो पर पाबंदी होनी चाहिए और इस पर प्रभावी अंकुश के लिए कठोर कानून बनाकर कठोर कार्रवाई की जानी चाहिए।

निष्कर्ष

सोशल मीडिया से हमारे देश के युवाओं की पूरी जीवन–शैली प्रभावित दिखलाई पड़ रही है जिसमें रहन–सहन, खान–पान, वेशभूषा और बोलचाल सभी समग्र रूप से शामिल हैं। मद्यपान और धूम्रपान उन्हें एक फैशन का ढंग लगने लगा है। नैतिक मूल्यों के हनन में ये कारण मुख्य रूप से है। आपसी रिश्ते–नातों में बढ़ती दूरियां और परिवारों में बिखराव की स्थिति इसके दुखदायी परिणाम हैं। आज देश के सामने सबसे बड़ा यक्ष प्रश्न यह है कि युवा शक्ति का सदुपयोग कैसे करें। इसका जवाब सोशल मीडिया में ही छुपा है। अगर हमारे देश का युवा चाहे तो सोशल मीडिया के द्वारा अपने आपको एक अच्छा व्यक्ति बना सकता है। कई चिकित्सकों का मानना है कि सोशल मीडिया लोगों में निराशा और चिंता पैदा करने वाला एक कारक है। ये बच्चों में खराब मानसिक विकास का भी कारण बनते जा रहा है। सोशल मीडिया का अत्यधिक उपयोग निद्रा को प्रभावित करता हैं। साइबर बुलिंग, छवि खराब होना आदि जैसे कई अन्य नकारात्मक प्रभाव भी हैं। सोशल मीडिया की वजह से युवाओं में ''गुम हो जाने का भय'' (एफओएमओ) अत्यधिक बढ़ गया है।यहां वे अपनी अच्छाईयों व रचनात्मकता से रूबरू करा सकते हैं। सूचना के आदान–प्रदान, जनमत तैयार करने, विभिन्न क्षेत्रों और संस्कृतियों के लोगों को आपस में जोडने़, भागीदार बनाने और सबसे महत्वपूर्ण यह है कि नये ढंग से संपर्क करने में युवा अपना हाथ बंटा सकता है और सोशल मीडिया को एक सशक्त और बेजोड़ उपकरण के रूप में तैयार कर सकता है।

संदर्भ

1. मंगल, एस.के., मंगल, शुभ्रा, व्यावहारिक विज्ञानों में अनुसंधान विधियां
2. कुंदन, संजय : कौन हैं इंटरनेट पर कमेंट करने वाले, अज्ञात
3. कर्नाड, गिरीश, प्रौद्योगिकी ने प्रभावित किया पढ़ने की आदत को
4. डा. प्रज्ञेश कुमार मिश्र (2008) राय, उमेश कुमार, सोशल मीडिया का बढ़ता दायरा वरदान भी, अभिशाप भी
5ण पांडे, पीयूष, सोशल मीडिया में तथ्यों से खिलवाड़
6ण सुमन, स्वर्ण, सोशल मीडिया, संपर्क क्रांति का कल, आज और कल
7ण वाल्फसफेल्ड गाडी, मेकिंग सेंस ऑफ मीडिया एंड पॉलिटिक्स
8ण कॉस्टा एलिजाबेटा, सोशल मीडिया इन साउथेस्ट तुर्की
9ण मिलर कोस्टा हेंस, एमसी डोनाल्ड, निकोलसु : हाउ द वर्ल्ड चेंज सोशल मीडिया, यूसीएल प्रेस
10ण सुमन, स्वर्ण, सोशल मीडिया, संपर्क क्रांति का कल, आज और कल
11ण वाल्फसफेल्ड गाडी, मेकिंग सेंस ऑफ मीडिया एंड पॉलिटिक्स
12ण कॉस्टा एलिजाबेटा, सोशल मीडिया इन साउथेस्ट तुर्की
13ण.सी.नेल्सन की द सोशल मीडिया रिपोर्ट (2012)